SHRI VRINDAVANI FOUNDATION

• Heritage • Community • Environment

Head Office : Sri Sri Radha Kunj Bihari Temple Nand Gaon Road, Barsana, Distt:- Mathura, (U.P.) Pin – 281405

Corporate Off. : 268, Metro Appartment, Jahangirpuri, New Delhi

Ph.No. : 9868040470,9891706705,9818536605,9313635406,20449252

Website : shrivrindavanifoundation.org.

Sh. Tej Pratap Yadav
(President)

Sh. Anirudh Prasad
Alias
Sadhu Yadav
(Hon'ble M.P.)
(Patron)

Sh. Dhananjay Kumar
(Vice President)

Sh. Anil Kumar Singh
(Convenor)

Sh. A.M. Shastri
(Gen. Secretary)

Sh. Chandra Prakash
(Treasurer)

सभी देशवासियों को

होली की हार्दिक शुभकामनाएँ

रंगों की बौछार और हँसी–ठिठोली का मौसम लाने वाला पर्व है होली। इसके रंगीले मिजाज और उत्साह की बात ही कुछ और है। प्रेम सौहार्द से साराबोर यह त्योहार अपने भीतर परंपराओं के विभिन्न रंगों को समेटे हुए हैं, जो विभिन्न स्थानों में अलग–अलग रूपों में सजे–धजे नजर आते है।

विभिन्नता में एकता वाले इस देश में अलग–अलग क्षेत्रों में इस त्योहार को मनाने के अलग–अलग अंदाज है। मगर इन विविधताओं के बावजूद हर परंपरा में एक समानता अवश्य है यह है प्रेम और उत्साह जो लोगों का आज भी सब कुछ भूल कर हर्ष और उल्लास के रंग में रंग देते हैं।

रंग–गुलाल से सजी होली का स्वागत विभिन्न क्षेत्रों के लोग अपने–अपने तरीके से करते हैं। वहीं कुछ स्थानों पर होली मनाने की परंपरा तो देश–विदेश में भी लोगों को आकर्षित करती है।

कृष्ण और राधा के प्रेम के प्रतीक मथुरा–वृन्दावन में होली की धूम 16 दिनों तक छायी रहती है, जिसमें इनके दैवीय प्रेम को याद किया जाता है। कहते हैं बचपन में कृष्ण राधा रानी के गोरे वर्ण और अपने कृष्ण वर्ण का कारण माता यशोदा से पूछा करते थे। एक बार उन्हें बहलाने के लिए माता यशोदा ने राधा के गालों पर रंग लगा दिया। तब से इस क्षेत्र में रंग और गुलाल लगाकर एक–दूसरे से स्नेह बाँटते हैं।

मथुरा–वृंदावन के साथ ही इस पर्व की अनुपम छटा राधा मैया के गाँव बरसाने और नंदगाँव में भी नजर आती है। वही बरसाने की लठमार होली तो विश्व प्रसिद्ध है जिसे देखने विदेशी लोग भी आया करते है। यहाँ पर महिलाएँ पुरूषों को लठ से मारती और पुरूष उनसे बचते हुए उन पर रंग लगाते है।

बरसाना में गुरूवार 5 मार्च 2009 को लट्ठमार होली पारंपरिक अंदाज में पूरे जोश से मनाई गई। ढोल नगाड़ों के बीच महिलाओं ने बरसाना के पुरूषों पर जमकर लट्ठ बरसाए, जिन्होंने महिलाओं को रंग और गुलाल से पूरी तरह रंग दिया। शाम के वक्त होली मैदान में लागों ने गुलाल से पुरी तरह रंग दिया इससे पूर्व भगवान कृष्ण के प्रतिनिधियों के रूप में पुरूष बरसाना पहुँचने के लिए नंदगाँव के नंदभवन से निकले।

पेज नं0 – 2

SHRI VRINDAVANI FOUNDATION

• Heritage • Community • Environment

Head Office : Sri Sri Radha Kunj Bihari Temple Nand Gaon Road, Barsana, Distt:- Mathura, (U.P.) Pin – 281405

Corporate Off. : 268, Metro Appartment, Jahangirpuri, New Delhi

Ph.No. : 9868040470,9891706705,9818536605,9313635406,20449252

Website : shrivrindavanifoundation.org.

Sh. Tej Pratap Yadav
(President)

Sh. Anirudh Prasad
Alias
Sadhu Yadav
(Hon'ble M.P.)
(Patron)

Sh. Dhananjay Kumar
(Vice President)

Sh. Anil Kumar Singh
(Convenor)

Sh. A.M. Shastri
(Gen. Secretary)

Sh. Chandra Prakash
(Treasurer)

बंगाल में होली का 'डोल पूर्णिमा' नामक स्वरूप बेहद प्रचलित है। इस दिन का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि इस दीन को प्रसिद्ध बैष्णव संत महाप्रभु चैतन्य का जन्मदिन माना जाता है। 'डोल पूर्णिमा' के अवसर पर भगवान के अलंकृत प्रतिमा का दल निकाला जाता है। और भक्त गण पूरे उत्साह के साथ इस दल में भाग लेते है। और हरि की उपासना करते है।

युधिष्ठिर ने भगवान श्री कृष्ण से पूछा, फाल्गुन पूर्णिमा को प्रत्येक गाँव एवं नगर में एक उत्सव क्यों होता है, प्रत्येक घर में बच्चे क्यों क्रीड़ामय हो जाते है। और होलाका क्यों जलाते हैं, उसमें किस देवता की पूजा होती है, किसने इस उत्सव का प्रचार किया, इसमें क्या होता है।

श्री कृष्ण ने युधिष्ठिर को राजा रघु के विषय में एक कथा सुनाई।

राजा रघु के पास लोग यह कहने के लिए गए कि 'ढोण्ढ़ा नामक एक राक्षसी बच्चों को दिन–रात डराया करती है। राजा द्वारा पूछने पर उनके पुरोहित ने बताया कि वह मालिन की पुत्री एक राक्षसी है। जिसे शिव ने वरदान दिया है कि उसे देव, मानव आदि नहीं मार सकते और न वह अस्त्र शस्त्र या जाड़े, गर्मी या वर्षा से मर सकती है, किंतु शिव ने इतना कह दिया कि वह क्रीड़ा युक्त बच्चों से भय खा सकती है।

पुरोहित ने यह भी बताया कि फाल्गुन की पूर्णिमा को जाड़े की ऋतु समाप्त होती है। और ग्रीष्म ऋतु का आगमन होता है। तब लोग हँसे और आनन्द मनाए बच्चे लकड़ी के टुकड़े लेकर बाहर आनंदपूर्वक निकल पड़े लकडियाँ एवं घास एकत्र करें। रक्षोऽम् मंत्रों के साथ उसमें आग लगाएँ, तालियाँ बजाएँ एवं अग्नि की तीन बार प्रदिक्षणा करें। हँसे और प्रचलित भाषा में गाने गाएँ, इसी शोरगुल एवं अट्टहास से तथा होम से वह राक्षसी मरेगी। जब राजा ने यह सब किया तो राक्षसी मर गई और उस दिन को होलिका कहा गया।

देश का हर कोना होली का रंगों से रंगा हुआ है। इस तरह से होली का यह पर्व पूरे देश में प्रेम और सौहार्द कें रंग में साराबोर रखता है।

शुभकामनाओं सहित

तेज प्रताप यादव
(अध्यक्ष व संस्थापक)